वैदिक व्याख्यान माला - सोलहवाँ व्याख्यान

ऋषियोंने वेदोंका संरक्षण
किस तरह किया ?

लेखक
श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
अध्यक्ष- स्वाध्याय-मण्डल, साहित्यवाचस्पति, गीतालंकार

स्वाध्याय-मंडल, पारडी (जि. सूरत)

मूल्य छः आने

ॐ

ऋषियोंने वेदोंका संरक्षण किस तरह किया ?

वेदकी रक्षाका प्रश्न आज भी हमारे सामने है। पर आज केवल वेदके अक्षरोंकी सुरक्षा उतनी कठिन नहीं है, जितनी प्राचीनकालमें कठिन थी। आज एक बार अच्छा और शुद्ध कंपोज तैयार करके उसके 'स्टीरियो ब्लॉक्स' बनवाये, अथवा उसी कंपोजसे 'इलेक्ट्रोके ब्लॉक्स' बनवाये, किंवा छपनेके पुस्तकके पत्रोंसे फोटोग्राफीकी सहायतासे 'ब्लाक' बनवाये, तो अक्षर-ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत-उदात्तादि स्वर-व्यंजन-मात्रा, पद आदिकी उत्तम सुरक्षा हो सकती है। आज जो युक्तियां हमारे पास हैं, उनके द्वारा यह सब हमारे लिये आसान है। सम्पूर्ण ऋग्वेदके ऐसे ब्लाक ५०,०००) रु० के व्ययसे बन सकते हैं और शेष तीनों वेदोंके ब्लाक भी इतने ही व्ययसे हो सकते हैं। आज इतना व्यय कोई नहीं करता है, यह वैदिक धर्मियोंकी उदासीनताका दोष है। पर चारों वेदोंकी रक्षाके लिये एक लाख रु० का व्यय करना कोई बडी भारी बात नहीं है।

स्वध्याय-मण्डलने शुद्ध वेद छापे हैं, और पृष्ठोंके फोटो लेकर ब्लाक करवानेकी मनीषा रखी है। हमारे पास इस कार्यके लिये ३०,०००) की रकम आ भी गयी है, पर यह अपूर्ण है इसलिये यह कार्य नहीं हो सका। इस विषयमें कई लोग यह पूछते हैं कि, ब्लाकोंमें अशुद्धि रही, तो फिर क्या किया जायगा? इसका सरल उत्तर यह है कि, प्रथम पुस्तक शुद्ध होनेपर ब्लाकोंमें अशुद्धि नहीं होगी। परन्तु मनुष्यकी आंख हैं, यदि प्रयत्न करनेपर भी ऋग्वेदके हजार ब्लाकोंमेंसे ४०-५० ब्लाकोंमें कुछ अशुद्धि प्रतीत हुई, तो उन ४०-५० ब्लाकोंको तोडकर, नये शुद्ध ब्लाक बनवाये जा सकते हैं। यह कोई ऐसी बात नहीं कि, जो न होनेवाली है और वेद जैसे जगद्वन्द्य धर्मपुस्तककी सुरक्षाके लिये ऐसा ही उपाय करना चाहिये। जो आज सहजहीसे हो सकता है कोई करे या न करे, यह समझने न समझनेकी बात है।

ऐसी सुविधा प्राचीन कालमें नहीं थी। आज दूसरी भी एक सुविधा है, वह यह कि शुद्ध कंपोज करके उसपर से हजारों ग्रन्थ जैसे आज छापे जा सकते हैं, वैसी बात प्राचीन समयमें नहीं थी। एक एक ग्रन्थ हाथसे लिखनेमें तथा उसे शुद्ध करनेमें जो कष्ट होते थे, वे कल्पनासे भी आज नहीं जाने जा सकते। ऐसे संकटोंके समयमें प्राचीन ऋषिमुनियोंने वेदकी सुरक्षा की, यह कार्य उन्होंने कितने परिश्रमोंसे किया होगा, यह बात हरएक वैदिकधर्मी मनुष्यको आज भी जानने योग्य है। इस विषयमें वेदकी सुरक्षाके लिये प्राचीन ऋषियोंने कैसे यत्न किये थे, इस विषयमें प्राचीन पुस्तकोंमें कुछ वचन मिले हैं, वे इस लेखद्वारा पाठकोंके सन्मुख रखते हैं। इससे पाठकोंको स्पष्ट रीतिसे पता लग जायगा कि, वेदरक्षाके लिये कितना प्रयत्न किया जाता था, और वेदके अक्षरोंकी सुरक्षा कितनी मेहेनतसे ऋषियोंने की थी। देखिये—

भगवान् संहितां प्राह, पदपाठं तु रावणः।
वाभ्रव्यर्षिः क्रमं प्राह, जटां व्याडीरवोचत् ॥१॥
मालापाठं वसिष्ठश्च, शिखापाठं भृगुर्व्यधात्।
अष्टावक्रोऽकरोद्रेखां, विश्वामित्रोऽपठद् ध्वजम् २
दण्डं पराशरोऽवोचत्, कश्यपो रथमब्रवीत्।
घनमत्रिर्मुनिः प्राह, विकृतीनामयं क्रमः ॥ ३ ॥

—मधुशिक्षायां मधुसूदनमुनिः

"भगवान्ने वेदोंकी संहिता कही, रावणने पदपाठ किया, बाभ्रव्य ऋषिने क्रमपाठ का प्रचार किया, (१)

जटापाठ व्याडीने शुरू किया, (२) वसिष्ठ ऋषिने मालापाठ किया, (३) भृगु ऋषिने **शिखापाठ** शुरू किया, (४) अष्टावक्र ऋषिने **रेखापाठ** की पद्धति शुरू की, (५) विश्वामित्र ऋषिने ध्वजपाठ शुरू किया, (६) पराशर ऋषिने **दण्डपाठ** किया, (७) कश्यप ऋषिने **रथपाठ** की प्रणाली शुरू की, (८) अत्रि मुनिने **घनपाठ** शुरू किया।

इस तरह संहिता, पद और क्रमके आश्रयसे इन आठ विकृतियोंके पाठोंकी प्रणाली इन आठ ऋषियोंने शुरू की। यह सब करनेका कारण यही था कि, ऐसे पाठ होनेसे और पदोंके आगेपीछे पठन होनेसे एक भी अक्षर आगेपीछे नहीं किया जा सकता। यदि अक्षरोंका हेरफेर हो जाय, पद आगेपीछे बन जायगे, तो किसी न किसी समय इन विकृतियोंके पाठोंमें वह हेरफेर करनेवाला पकडाही जायगा और उसकी निन्दा सब वेदपाठियोंमें हो जायगी। इस तरह वेद-पाठकी रक्षाका यत्न इतने यत्नसे इन ऋषियोंने किया था।

संहितापाठकी पद्धति।

संहिता-पाठकी पद्धति भी एक विशेष पद्धति है, जो इस समय महाराष्ट्रमें ही उत्तम रीतिसे प्रचलित है। यद्यपि यह लुप्तप्रायसी हो रही है, तथापि महाराष्ट्रमें इस समयमें भी दशग्रन्थी घनपाठी विद्वान् सौ डेढ सौ मिल सकते हैं। इतने विद्वान् अन्य प्रान्तोंमें नहीं हैं। ऋग्वेदको आमूलाग्र कण्ठ करनेवाले इस समय महाराष्ट्रीय ही हैं। यह एक महाराष्ट्रके लिये भूषण है। पर यह भूषण आगेके ५० वर्षोंमें रहेगा, ऐसी आशा हमें नहीं है।

मंत्रका व्युत्क्रम और सरल पाठ।

संहितापाठमें दो प्रकारका पाठ किया जाता है। एक सरल मंत्रोंको कण्ठ करना और सरल क्रमसे पढना। यह तो सरल है और ऐसा सरल पाठ करनेवाले बहुतमिलते भी हैं। परन्तु इसमें मंत्रोंका व्युत्क्रम करनेवाले बहुतही थोडे होते हैं। यह कार्य बडा कठिन है और मंत्रोंकी अच्छी उपस्थितिके बिना तथा विशेष स्मरणशक्तिके विना यह व्युत्क्रम-पाठ नहीं हो सकता।

मंत्रोंका सरल क्रमशः पाठ करनेको '**संहितापाठ**' कहते हैं, और मंत्रोंको विरुद्ध क्रमसे बोलनेको '**संहिताका व्युत्क्रमपाठ**' कहते हैं। जैसा ऋग्वेदके प्रथम सूक्तमें ९ मंत्र हैं, इनको १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ ऐसे क्रमसे पाठ करनेका नाम '**संहितापाठ**' है और ९, ८, ७, ६, ५, ४, ३, २, १ ऐसे उलटे क्रमसे पाठ करनेका नाम '**संहिता का व्युत्क्रमपाठ**' है। यह व्युत्क्रमपाठ बहुत ही अद्वितीय स्मरणशक्तिवाले ही कर सकते हैं। हर एकसे यह कार्य नहीं हो सकता। एक सूक्तके मंत्र भी उलटे क्रमसे बोलना सहज नहीं हैं, फिर अनुवाक्, अध्याय, मण्डल आदिके मंत्रोंको उलटे क्रमसे बोलना कितना कठिन होगा, इसका विचार विद्वान लोक ही कर सकते हैं। परन्तु हमने ऐसे व्युत्क्रमपाठी विद्वान देखे हैं और ऋग्वेदका मुद्रण जिस अद्वितीय विद्वानके अधिष्ठातृत्वमें हो रहा है, वे वेदमूर्ति **सखारामभटजी** ऐसे ही उत्तम **वेदके व्युत्क्रमपाठी विद्वान्** हैं। सूक्तके सूक्त जैसे सरल क्रमसे वे बोलते हैं, वैसे ही उलटे क्रमसे भी विना प्रमाद किये बोलते हैं!!!

अर्धर्चपाठः।

मंत्रपाठमें और एक पद्धति है, आधा मंत्र एक बोले और अगला आधा मंत्र दूसरा बोले। ऐसा करनेके समय पहिलेका आधा मंत्र समाप्त होनेके पूर्व ही दूसरेको अगले आधे मंत्रका प्रारम्भ करना होता है। इस तरहका पाठ करनेके लिये आधे मंत्र एक एक छोडकर स्मरणमें रखने पडते हैं। विना ऐसा स्मरण रहे, अगला चरण स्मरण नहीं हो सकता।

इस तरह संहितापाठमें क्रम और व्युत्क्रम तथा अर्धर्च पाठ ये तीन प्रकारके पाठ आज भी महाराष्ट्रमें प्रचलित हैं।

पदपाठकी पद्धति।

मंत्रोंका पदपाठ है, यह सब जानते हैं, परन्तु मंत्रपाठ और पदपाठमें थोडा हेरफेर भी है। जो '**पदसमूह**' एक बार किसी पूर्वमंत्रमें आया होता है, वह पदसमूह फिर पदपाठमें नहीं बोला जाता। इसको '**गलित-पदसमूह**' कहते हैं। जिस समय वेदका पदपाठ बोला जाता है, उस समय इन दुबारा आये गलित पदसमूहोंको बोलते नहीं

है। इस नियमको बडी सावधानीसे स्मरण रखना पडता है। संहिता तो सब मंत्रोंकी यथाक्रम बोली जाती है, परन्तु पदपाठमें द्विरावृत्त अर्थात् दुबारा आया पदसमूह बोला नहीं जाता। इससे एक लाभ यह होता है कि, दुबारा तिबारा कौनसे पद कहां आये हैं, वे संपूर्ण संहितामें कितनी बार आ गये हैं, इसका स्मरण इस परिपाटीसे सहजहीसे होता है। इसलिये जो पदपाठी विद्वान होते हैं, उनको पुनरुक्त मंत्रभागोंका पता उत्तम रीतिसे रहता है।

पदपाठमें दूसरी एक विशेषता है। संहितापाठके क्रमसे पदपाठका क्रम क्वचित् स्थानपर विभिन्न होता है, वहां कुछ व्युत्क्रमसा होता है, जैसे—

पदपाठकी भिन्नता।

संहिता-पाठ	पदपाठ
इन्द्रावरुण वामहं	इन्द्रावरुणा। वां। अहं। मं० १।१७।७
न्याविध्यत्	नि। अविध्यत्। मं० १।३३।१२
न्यावृणक्	नि। अवृणक्। मं० १।१०१।२
अगादारैगु	अगात्। अरैक्। उँ इति। मं. १।११३।२
अभ्यादेवं	अभि। अदेवं। मं० २।२२।४
आसता सचन्तां	असता। सचन्तां। मं० ४।५।१४
शुनश्चित् शेपं	शुनःशेपं। चित्। मं० ५।२।७
स्वधितीव	स्वधितिः। इव। मं० ५।७।८
वरुणेळासु	वरुण। इळासु। मं० ५।६२।५
,,	वरुणा। इळासु। मं० ५।६२।६
इत्था देव	इत्था। देवा। मं० ५।६७।१
धिष्ण्येमे	धिष्ण्ये इति। इमे इति। मं० ७।७२।३
अश्वेषितं	अश्वऽइषितं। मं० ८।४६।२८
रजेषितं	रजःऽइषितं ,,
शुनेषितं	शुनाऽइषितं ,,
नकिरादेव	नकिः। अदेवः। मं० ८।५९।२
सद्भूम्या ददे	सत्। भूमिः। आ। ददे। मं० ९।६१।१०
बृहस्पते रवथेन	बृहस्पतेः। रवथेन। मं० ९।८०।१
नरा च शंसं	नराशंसं। च। मं० ९।८६।४२
नरा वा शंसं	नराशंसं। वा। मं० १०।६४।३
चित्कंभनेन	चित्। स्कंभनेन। मं० १०।१११।५

इस तरह वेदोंमें क्वचित् संहितापाठसे पदपाठ भिन्न है, केवल व्याकरणसे ही यह पदपाठ सिद्ध नहीं हो सकता। जो पाठक व्याकरणके नियम जानते होंगे, उनको कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि, किस तरह यह पदपाठ भिन्न है। इसीलिये वैदिकोंको संहितापाठके समानही पदपाठ भी कण्ठ ही करना होता है। और वेदपाठी संहितापाठके समान पदपाठको भी कण्ठ ही कर देते हैं !!

पदोंकी तीसरी विशेषता

पदपाठकी दो विशेषताएं पूर्वस्थानमें बतायी हैं। (१) एक तो उस पदपाठमें कुछ पद नहीं रहते, जो द्विवार आते हैं, और (२) पदपाठ भिन्न भी होता है। (३) तीसरी विशेषता यह है कि संहितापाठसे पदपाठके स्वर भिन्न होते हैं। पद होते ही स्वरभेद होता है। इसलिये पदपाठको उतने ही प्रयत्नसे कण्ठ करना पडता है कि, जितने यत्नसे संहिताको कण्ठ किया जाता है।

पदोंकी चर्चा

पदपाठ कण्ठ होनेके पश्चात् जैसी संहिताकी चर्चा होती है, वैसी ही पदपाठकी भी चर्चा होती है। चर्चाका अर्थ है मुखसे बोलना। मन्त्रकी चर्चा दो प्रकारकी पूर्वस्थानमें कही है। आमनेसामने चर्चा करनेवाले बैठते हैं, और एक संघवाले एक मन्त्र बोलते हैं और दूसरे सामनेवाले दूसरा बोलते हैं। अथवा आधा मन्त्र एक संघके लोग बोलते हैं और द्वितीयार्धको दूसरे संघवाले बोलते हैं। इस तरह अध्यायोंके अध्याय विना प्रमाद किये बोलते हैं। इसमें इस बातकी कठिनता होती है कि, पहिले संघका वाक्य समाप्त होनेके पूर्व ही दूसरे संघका प्रारम्भ होना चाहिये। आगेके मन्त्रका अथवा मन्त्रार्धका प्रारम्भ करनेयोग्य मंत्रोंका स्मरण रहना ही पाठशक्तिकी विशेषता है।

इसी तरह पदोंकी चर्चा होती है। एक संघवाले एक पद बोलेंगे और दूसरा संघ दूसरा अगला पद बोलेंगे, परन्तु पहिलेका समाप्त होनेसे पहिले ही दूसरेको अपना पद बोलना चाहिये। इसके लिये एकपद छोडकर दूसरा बोलनेका अभ्यास

होना चाहिये। तब इस चर्चामें सफलता मिलती है। यह चर्चा कैसी बोली जाती है, यह देखिये—

वेदपाठी विद्वानोंका एक संघ			वेदपाठी विद्वानोंका दूसरा संघ
	तत् १	२ सवितुः	
	वरेण्यं ३	४ भर्गः	
	देवस्य ५	६ धीमहि	
	धियः ७	८ यः	
	नः ९	१० प्रचोदयात्	
१			२

इससे पता चल सकता है कि, इस चर्चापठनपद्धतिमें हरएकको एक एक पद छोडकर अगला पद बोलनेकी स्मरण शक्ति रहनी चाहिये। हमने ऐसे वेदपाठी देखे हैं कि जो संपूर्ण संहिताका पदपाठ बीचके एक एक पदको त्याग कर विना प्रमाद किये बोलते जाते हैं !! और ऐसे पदपाठी विद्वान् महाराष्ट्रमें इस समय हैं। स्मरण रहे कि विशेष प्रयत्नके विना और विशेष आयास करनेके विना यह पदपाठ इस तरह कण्ठ होना कठिन है।

व्युत्क्रम-पदपाठ।

पदपाठको भी व्युत्क्रमसे अर्थात् उलटे क्रमसे बोलनेवाले होते हैं। हमारे स्वाध्याय-मण्डलके वे० मू० सखाराम भट्टजी ऐसा उलटे क्रमसे पदपाठ बोलते हैं। संपूर्ण ऋग्वेदका पदपाठ अन्तसे आदितक कहनेवाला हमने और एक वेदपाठी विद्वान् देखा था। वह चाहे संहिताके अन्तसे, चाहे किसी मंडलके अन्तसे, चाहे किसी सूक्तके अन्तसे, मंत्र तथा पदपाठ विना प्रमाद किये बोलता था। इस समय वह गुजर चुका है। हमारे ही पितृव्यकुलका वह वेदपाठी था। इसको छोडकर तथा हमारे वे० मू० सखाराम भट्टजीको छोडकर ऐसा व्युत्क्रम पदपाठी हमने दूसरा नहीं देखा। बहुधा ऐसा वेदपाठी मिलना असम्भव ही है, क्योंकि विशेष स्मरणशक्ति न होनेसे यह होना सर्वथा असंभव है।

गायत्री मन्त्रका सीधा पदपाठ यह है—

तत्। सवितुः। वरेण्यं। भर्गः। देवस्य। धीमहि। धियः। यः। नः। प्रचोदयात्। प्रचोदयादिति प्र चोदयात्।

इसी मन्त्रका व्युत्क्रम (उलटा) पदपाठ यह है—

प्रचोदयात्। नः। यः। धियः। धीमहि। देवस्य। भर्गः। वरेण्यं। सवितुः। तत्।

गायत्री मन्त्र तो हर कोई जानता है, पर उसका उलटा पदपाठ बोलना कितना कठिन है, यह पाठक ही स्वयं देख सकते हैं। यदि एक मन्त्रका उलटा पदपाठ बोलना कठिन है, तब तो सूक्तोंका उलटा पदपाठ बोलना तो इससे शतगुणा कठिन है, यह हरकोई जान सकता है। और एक पद छोडकर बोलते जाना तो उससे भी कठिन है। पर ऐसे विद्वान् आज भी मिलते हैं। व्युत्क्रमपाठी मिलना ही दुष्कर हुआ है, सरल पाठी तो इस समय भी हैं।

इस समयतक जो विभिन्न पाठ बताये, उनको फिर दुहराते हैं।

१. मन्त्रपाठ।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।

२. पदपाठ।

अग्ने। नय। सुपथा। राये। अस्मान्। विश्वानि। देव। वयुनानि। विद्वान्।

३. व्युत्क्रमपाठ।

विद्वान्। वयुनानि। देव। विश्वानि। अस्मान्। राये। सुपथा। नय। अग्ने।

४. मण्डूकप्लुत पदपाठ।

(१) अग्ने ।...। सुपथा ।...। अस्मान् ।...।
(२) ।...। नय ।...। राये ।...। विश्वानि
(१) देव ।...। विद्वान् ।...।
(२) ।...। वयुनानि ।...॥

यह पाठ पदोंकी चर्चा बोलनेके समय बोला जाता है। जो पूर्व स्थलमें बताया जा चुका है। इस चर्चामें एक एक पदका त्याग करके अगला पद बोला जाता है। यह इतना जलदी बोलते हैं कि उसका वर्णन ही नहीं हो सकता। एक

संघ १, ३, ५, ७, ९ ये पद बोलेंगे और दूसरा संघ २, ४, ६, ८ ये पद बोलेंगे। बीचके गलित या पुनरुक्त पद छोडने होते हैं, सामासिक पद तोडकर बोले जाते हैं जैसा—

'रत्नधातमं इति रत्न-धा-तमं'

'पुरोहितं इति पुरःऽहितं' इ०

इस तरह सब पद बोलते हैं और इतनी जल्दीमें बोलते हुए एक भी गलती नहीं होती, यह आश्चर्य है!!!

इसके नंतर क्रमपाठ, जटापाठ, मालापाठ, शिखा-पाठ, रेखापाठ, ध्वजपाठ, दण्डपाठ, रथपाठ, घन-पाठ, ये ९ पाठ वेदमंत्रोंके पदोंके सरल और उलटे क्रमसे होते हैं। क्रमपाठके ही आश्रयसे आगेके ८ भेद बनते हैं। इन सब पाठोंमें सबसे प्रथम पूर्वोक्त संहिता तथा पदपाठ होनेके पश्चात् यही क्रमपाठ कण्ठ करना होता है। यह इस तरह होता है—

क्रमपाठ।

अग्ने नय। नय सुपथा। सुपथा राये। राये अस्मान्। अस्मान् विश्वानि। विश्वानि देव।
देव वयुनानि। वयुनानि विद्वान्॥ विद्वानिति विद्वान्॥

अन्तिम पद 'इति' रखकर दो बार बोला जाता है।

यही क्रमपाठ आगेके आठों विकृतियोंका आधार है। यहां क्रमसे दो दो पद बोले जाते हैं। उक्त स्थानमें क्रमपाठ और आठ विकृतियोंके नाम दिये हैं। परन्तु प्रत्येक विकृतिमें कई भेद भी हैं।

उक्त विकृति बननेके लिये पञ्चसंधि करनेकी अत्यंत आवश्यकता होती है। पञ्चसंधि किये विना ठीक तरह विकृति बोलना असंभव है। पञ्चसंधिका नमूना यह है—

'धियो यः' इन दो पदोंके पञ्चसंधि ऐसे होते हैं—
धियो यः। यो यः। यो धियः। धियो धियः।
धियो यः।

दो पदोंका परस्परव्यवहार पांच ही प्रकारोंसे हो सकता है। वेदके प्रत्येक दो पदोंका इस तरह संधि स्मरण रखना पडता है। इससे वेदका पद आगेपीछे कैसा भी हुआ, तो उसका ठीक ठीक संधि कैसा होता है, यह जाना जा सकता है। इसी कारण वेदका पद आगेपीछे न होता हुआ अपने स्थानपर सुरक्षित रहता है। पाठक इस प्रयत्नको ठीक तरह समझें।

जटापाठमें दो भेद हैं, ऐसा सरल जटापाठ और दूसरा पञ्चसन्धियुक्त जटापाठ।

मालापाठके दो भेद हैं, एक क्रममाला और दूसरी पुष्पमाला। इसका पाठविधि आगे बताया है। मालाके और २५ भेद कहे हैं—

अवसानाच्चावसानान्तं क्रमादुत्क्रमणं पठेत्।
मालाख्यां विकृतिं धीमान् संहितायाः सदा पठेत्॥
पञ्चविंशत्प्रभेदां हि मालाख्यां विकृतिं विदुः।
पञ्चविंशति भेदाश्च मालायाः संभवन्ति हि॥

मालानामक वेदविकृतिके २५ भेद होते हैं। जिनके नाम ये हैं—

१ पद, २ पदव्युत्क्रम, ३ क्रम, ४ जटा, ५ शिखा, ६ संहितापद, ७ संहिताक्रम, ८ संहिताजटा, ९ संहिताशिखा, १० पदक्रम, ११ पदजटा, १२ पद-शिखा, १३ क्रमजटा, १४ क्रमशिखा, १५ जटाशिखा, १६ संहितापदक्रम, १७ संहिताक्रमजटा, १८ संहिता-जटाशिखा, १९ संहितापदक्रमजटा, २० पदजटा-शिखा, २१ क्रमजटाशिखा, २२ संहितापदक्रमजटा, २३ संहिताक्रमजटाशिखा, २४ संहितापदक्रमजटा-शिखा, २५ माला।

मालाके दो भेद हमें मालूम हैं। यहां २५ भेद लिखे हैं। पर इस समय ये २५ प्रकारके मालापाठ कैसे होते हैं, इसका किसीको पता नहीं है। पाठकोंमेंसे किसीको अथवा किसी अन्य विद्वान्‌को इन भेदोंका विधि मालूम हो, अथवा किसीके पास कोई ग्रन्थ प्राचीन लिखित हो, तो उसका पता हमें चाहिये।

वल्ली नामक विकृतिके इसी तरह २५ और भेद इसी लिखित ग्रंथमें लिखे हैं। इनके नाम ग्रंथ जीर्ण होनेसे हस्तगत नहीं हुए। इनका भी पता किसीको हो, तो हम जानना चाहते हैं। रथके विषयमें निम्नलिखित पंक्तियां मिलती हैं—

वल्ल्याः क्रमः समाख्यातो जटाख्यातं पदद्वयम्।
क्रमवत्क्रमणं कुर्यात् व्युत्क्रमं च पदे पदे॥

अनुलोमं जटातन्तुं विलोमं तु पृथक् पृथक् ।
रथाख्यां विकृतिं ब्रूयात् रथभेदाः प्रकथ्यन्ते ।
अनुलोमं जटातन्तुं प्रपठेद्वै पृथक् पृथक् ।
रथाख्यां विकृतिं धीमान् विलोमं तु पृथक् पृथक् ॥
रथस्यैकादशभेदा भवन्ति, ते तु विलोमेनैव
जायन्ते ।

यहां रथके ११ भेद कहे हैं। इमें केवल द्विचक्रीरथ, त्रिचक्रीरथ, चतुश्चक्रीरथ, मन्त्रद्वयरथ ये चार ही भेद मालूम हैं। कदाचित् मन्त्रत्रितयरथ, मन्त्रचतुष्करथ, ऐसे और दो भेद हो सकते हैं, क्योंकि मन्त्रद्वयरथके अनुसंधानसे ये और दो भेद होना सम्भव है, इस तरह ये छः भेद हुए। परन्तु उक्त श्लोकमें ११ भेद रथके कहे हैं। उनका किसीको पता इस समय नहीं है। संभव है कि प्रत्येक रथको पञ्चसन्धियुक्त कहनेसे ५ या ६ भेद अधिक होते होंगे। यह एक खोजका विषय है।

इस समय जो विकृति वैदिक विद्वान् बोलते हैं, उनको नमूनेके तौर पर यहां दिया है। पाठक उनको देखकर जान सकते हैं कि प्राचीन ऋषिमुनियोंने वेदकी सुरक्षाके लिये कितना महान् यत्न किया था। इसमें 'घन' नामक जो विकृति है, उसमें द्वितीय पदसे प्रत्येक पद आगेपीछे करके १३ वार बोला जाता है। संपूर्ण ऋग्वेदका इस तरह घन-पाठ मुखसे ही बोलनेवाले, अर्थात् हाथमें ग्रन्थ न लेते हुए, बोलनेवाले वैदिक विद्वान् महाराष्ट्रमें २०--२५ हैं। हमारे स्वाध्याय-मण्डलमें कार्य करनेवाले श्री. पं० वे० मू० सखारामभट्टजी ऐसे ही घनपाठी विद्वान् हैं।

कई विद्वान् संपूर्ण ऋग्वेदका घनपाठका पारायण करते हैं, इस कार्यके लिये कई महिने आवश्यक होते हैं। यह जैसा परिश्रमका कार्य है, वैसा ही उत्तम बुद्धिमत्ताका और उत्तम स्मरणशक्तिका भी कार्य है।

अस्तु। प्राचीन ऋषिमुनियोंने वेदके पदपद सुरक्षित रखनेके लिये इतने परिश्रम किये थे। इस समयमें भी ऐसे परिश्रमी वेदवेत्ता महाराष्ट्रमें हैं। किसी अन्य प्रान्त में नहीं है।

आज वेदोंकी सुरक्षा कैसी हो ?

आज वेदोंके ब्लाक बनवाये जांयगे, तो वेदके अक्षरों की सुरक्षा हो सकती है। इस कार्यके लिये धन चाहिये। चारों वेदोंके २००० पृष्ठोंके लिये कमसे कम १०००००) रु० लगेंगे। वेदकी सुरक्षाके लिये कौन यह धन देता है, इसकी चिन्तामें हम हैं।

इन आठों विकृतियोंके उदाहरण इसी स्थानमें अगले पृष्ठोंमें पाठक देख सकते हैं—

अष्टौ विकृतयः।

संहितालक्षणम्।

परः सन्निकर्षः संहिता। (अष्टाध्याय्यां १।४।१०९ पाणिनिः) (वर्णानामतिशयितः संनिधिः संहितासंज्ञः स्यात्)

[१] संहितामन्त्रः।

ओषधयः संवदन्ते सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन्पारयामसि॥

(ऋ० अष्टक ८, अ० ५, व० ११; मं० १०, सू० ९७, मं० २२)

(पदच्छेदपूर्वको) मंत्रपाठः।

ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस् तं राजन् पारयामसि॥

पदसंहितालक्षणम्।

पदविच्छेदोऽसंहितः॥ (प्रातिशाख्यसूत्रे कात्यायनः) सुप्तिङन्तं पदं (अष्टा०)

[२] पदपाठः।

ओषधयः। सं। वदन्ते। सोमेन। सह। राज्ञा।
१ २ ३ ४ ५ ६

यस्मै। कृणोति। ब्राह्मणः। तं। राजन्। पारयामसि॥ १॥
७ ८ ९ १० ११ १२

क्रमलक्षणम्।

क्रमेण पदद्वयस्य पाठः। क्रमपाठो 'योगरूढा संहिता' इत्युच्यते। 'क्रमः स्मृतिप्रयोजनः' (प्रा०सू०४।१८कात्यायनः

क्रमपाठलक्षणम् शौनकेनोक्तम्।

क्रमो द्वाभ्यामभिक्रम्य प्रत्यादायोत्तरं द्वयोः। उत्तरेणोपसंदध्यात्तथार्धर्चं समापयेत्॥

[३] क्रमपाठः।

ओषधयः सं। सं वदंते। वदंते सोमेन। सोमेन सह। सह राज्ञा। राज्ञेति राज्ञा॥
१ २ २ ३ ३ ४ ४ ५ ५ ६ ६ ६

यस्मै कृणोति। कृणोति ब्राह्मणः। ब्राह्मणस्तं। तं राजन्। राजन् पारयामसि।
७ ८ ८ ९ ९ १० १० ११ ११ १२

पारयामसीति पारयामसि॥ १॥
१२ १२

*

[४] पञ्चसन्धिः ।

पञ्चसंधिलक्षणम् ।

अनुक्रमश्चोत्क्रमश्च व्युत्क्रमोऽभिक्रमस्तथा । संक्रमश्चेति पञ्चैते जटायां कथिताः क्रमाः ।

क्रमः= १ + २; २ + ३ । उत्क्रमः= २ + २; ३ + ३ । व्युत्क्रमः= २ + १; ३ + २ ।
अभिक्रमः= १+१; २ + २ । संक्रमः= १ + २; २ + ३ ।

(क्रमः) १-२	(उत्क्रमः) २-२	(व्युत्क्रमः) २-१	(अभिक्रमः) १-१	(संक्रमः) १-२
ओषधयः सं । १ २	सं सं । २ २	समोषधयः । २ १	ओषधय ओषधयः । १ १	ओषधयः सं । १ २
सं वदन्ते । २ ३	वदन्ते वदन्ते । ३ ३	वदन्ते सं । ३ २	सं सं । २ २	सं वदन्ते । २ ३
वदन्ते सोमेन । ३ ४	सोमेन सोमेन । ४ ४	सोमेन वदन्ते । ४ ३	वदन्ते वदन्ते । ३ ३	वदन्ते सोमेन । ३ ४
सोमेन सह । ४ ५	सह सह । ५ ५	सह सोमेन । ५ ४	सोमेन सोमेन । ४ ४	सोमेन सह । ४ ५
सह राज्ञा । ५ ६	राज्ञा राज्ञा । ६ ६	राज्ञा सह । ६ ५	सह सह । ५ ५	सह राज्ञा । ५ ६
राज्ञेति राज्ञा । ६ ६				

' तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । ' (ऋ० अ० ३।४।१०; मं० ३।६२।१०) इत्यस्य—

पञ्चसन्धिः ।

तत्सवितुः ।	सवितुस्सवितुः ।	सवितुस्तत् ।	तत्तत् ।	तत्सवितुः ।
सवितुर्वरेण्यं	वरेण्यं वरेण्यं ।	वरेण्यं सवितुः ।	सवितुस्सवितुः	सवितुर्वरेण्यं ।
वरेण्यं भर्गः ।	भर्गो भर्गः ।	भर्गो वरेण्यं ।	वरेण्यं वरेण्यं ।	वरेण्यं भर्गः ।
भर्गो देवस्य ।	देवस्य देवस्य ।	देवस्य भर्गः ।	भर्गो भर्गः ।	भर्गो देवस्य ।
देवस्य धीमहि ।	धीमहि धीमहि ।	धीमहि देवस्य ।	देवस्य देवस्य ।	देवस्य धीमहि ।
धीमहीति धीमहि ।		(एवमग्रेऽपि)		

विकृति-लक्षणानि ।

शैशिरीये समाम्नाये व्यालिनैव १ महर्षिणा ।
जटाद्या विकृतीरष्टौ लक्ष्यन्ते नातिविस्तरम् ॥ १ ॥
जटा माला शिखा रेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः ।
अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा महर्षिभिः ॥ २ ॥

अष्टौ विकृतयः क्रमपूर्वा भवन्ति । तासु जटा-दण्डसंज्ञके द्वे विकृती मुख्ये । यत एताभ्यामेवान्या विकृतयः संभवन्ति । तत्र जटां शिखाऽनुसरति । तथा च दण्डं माला-रेखा-ध्वज-रथा अनुसरन्ति । घनस्तु जटादण्डावनुसरति ।

[१] जटा ।

प्रथमं जटालक्षणम् ।

अनुलोमविलोमाभ्यां त्रिवारं हि पठेत् क्रमम् । विलोमे पदवत्संधिः अनुलोमे यथाक्रमम् ॥

द्वितीयं जटालक्षणम् ।

क्रमे यथोक्ते पदजातमेव द्विरभ्यसेदुत्तरमेव पूर्वम् ।
अभ्यस्य पूर्वं च तथोत्तरे पदेऽवसानमेवं हि जटाभिधीयते ॥

जटा लक्षणम्

अनुलोमविलोमाभ्यां त्रिवारं हि पठेत्क्रमम् । जटाख्यां विकृतिं ब्रूयाद्विज्ञाय क्रमलक्षणम् ।
क्रमो द्वाभ्यामनुक्रम्य व्युत्क्रमोत्क्रमसंधिना । यथावत्स्वरसंयुक्तं सा जटेत्यभिधीयते ॥
ब्रूयात्क्रमविपर्यासौ पुनश्च क्रममुत्तरम् । जटाख्यां विकृतिं धीमान् विज्ञाय क्रमलक्षणम् ।

जटा= अनुलोमः १–२ + विलोमः २–१ + अनुलोमः १–२ ॥ [क्रमः १–२ + व्युत्क्रमः २–१ + सक्रमः १–२]

जटापाठः ।

ओषधयस् सं, समोषधय, ओषधयस् सम् ॥ सं वदन्ते, वदन्ते सं, सं वदन्ते ॥
१ २ २ १ १ २ २ ३ ३ २ २ ३
वदन्ते सोमेन, सोमेन वदन्ते, वदन्ते सोमेन ॥ सोमेन सह, सह सोमेन, सोमेन सह ॥
३ ४ ४ ३ ३ ४ ४ ५ ५ ४ ४ ५
सह राज्ञा, राज्ञा सह, सह राज्ञा ॥ राज्ञेति राज्ञा ॥
५ ६ ६ ५ ५ ६ ६ ६
यस्मै कृणोति, कृणोति यस्मै, यस्मै कृणोति ॥
७ ८ ८ ७ ७ ८
कृणोति ब्राह्मणो, ब्राह्मणः कृणोति, कृणोति ब्राह्मणः ॥
८ ९ ९ ८ ८ ९
ब्राह्मणस्तं, तं ब्राह्मणो, ब्राह्मणस्तं ॥ तं राजन्, राजंस्तं, तं राजन् ॥
९ १० १० ९ ९ १० १० ११ ११ १० १० ११
राजन्पारयामसि, पारयामसि राजन्, राजन्पारयामसि ॥ पारयामसीति पारयामसि ॥ १ ॥
११ १२ १२ ११ ११ १२ १२ १२

---

१ व्यालिना=व्याडिना ।

[२] माला ।

मालाया द्वौ भेदौ पुष्पमाला-क्रममाला चेति । तत्र क्रममालायाः लक्षणम्—

क्रम-मालालक्षणम् ।

ब्रूयात्क्रमविपर्यासावर्धचेस्यादितोऽन्ततः । अन्तं चादिं नयेदेवं क्रममालेति गीयते ॥
अवसानोश्चावसानांतं क्रमादुत्क्रमणं भवेत् । जटाख्यां विकृतिं धीमान् संहितायाः सदा पठेत् ॥
पंचविंशति प्रभेदा वै मालाख्यां विकृतिं पठेत् । संहितादि शिखान्तं च अनुलोमविलोमतः ॥
आदितोऽन्ततश्चापि मालाख्यां विकृतिं पठेत् । पञ्चविंशति प्रभेदाश्च मालाया संभवन्ति हि ॥
मालायाश्च पुनर्भेदा कथिताः पञ्चविंशति ।

(१ क्रम-माला)

ओषधयः सं । राज्ञेति राज्ञा ॥ सं वदन्ते । राज्ञा सह ॥ वदन्ते सोमेन । सह सोमेन ॥
१ २ ६ ६ २ ३ ६ ५ ३ ४ ५ ४
सोमेन सह । सोमेन वदन्ते ॥ सह राज्ञा । वदन्ते सं ॥ राज्ञेति राज्ञा । समोषधयः ॥
४ ५ ४ ३ ५ ६ ३ २ ६ ६ २ १
यस्मै कृणोति । पारयामसीति पारयामसि ॥ कृणोति ब्राह्मणः । पारयामसि राजन् ॥
७ ८ १२ ११ ८ ९ १२ ११
ब्राह्मणस्तं । राजँस्तं ॥ तं राजन् । तं ब्राह्मणः ॥ राजन्पारयामसि । ब्राह्मणः कृणोति ॥
९ १० ११ १० १० ११ १० ९ ११ १२ ९ ८
पारयामसीति पारयामसि ॥ कृणोति यस्मै ॥
१२ ११

+ क्रम—माला

ओषधयः सं । १ — २ राज्ञेति राज्ञा
सं वदन्ते । ३ — ४ राज्ञा सह ।
वदन्ते सोमेन । ५ — ६ सह सोमेन ।
सोमेन सह । ७ — ८ सोमेन वदन्ते ।
सह राज्ञा । ९ — १० वदन्ते सं ।
राज्ञेति राज्ञा । ११ — १२ समोषधयः ।
यस्मै कृणोति । १३ — १४ पारयामसीति पारयामसि ।
कृणोति ब्राह्मणः । १५ — १६ पारयामसि राजन् ।
ब्राह्मणस्तं । १७ — १८ राजँस्तं ।
तं राजन् । १९ — २० तं ब्राह्मणः ।
राजन् पारयामसि । २१ — २२ ब्राह्मणः कृणोति ।
पारयामसीति पारयामसि । २३ — २४ कृणोति यस्मै ।

+ क्रममालायाः पठनक्रमोऽत्राङ्कैः प्रदर्शितः ।

(क्रम--माला)

[आदितोऽन्ततः] = [अन्तं चादिं नयेत्]				[आदितोऽन्ततः] = [अन्तं चादिं नयेत्]		
[१]	१ ओषधयः सं	— राज्ञेति राज्ञा	६	[२]	७ यस्मै कृणोति — पारयामसीति पारयामसि	१२
	२ सं वदन्ते	— राज्ञा सह	५		८ कृणोति ब्राह्मणः — पारयामसि राजन्	११
	३ वदन्ते सोमेन	— सह सोमेन	४		९ ब्राह्मणस् तं — राजँस्तं	१०
	४ सोमेन सह	— सोमेन वदन्ते	३		१० तं राजन् — तं ब्राह्मणः	९
	५ सह राज्ञा	— वदन्ते सं	२		११ राजन् पारयामसि- ब्राह्मणः कृणोति	८
	६ राज्ञेति राज्ञा	— समोषधयः	१		१२ पारयामसीति पारयामसि - कृणोति यस्मै	७

(२ पुष्पमाला ।)

पुष्पमाला—लक्षणम् ।

माला मालेव पुष्पाणां पदानां ग्रन्थिनी हि सा । आवर्तन्ते त्रयस्तस्यां क्रमव्युत्क्रमसंक्रमाः ॥

जटावदेव पुष्पमाला भवति । तत्र प्रतिपदं विराम इतिकारश्चेति विशेषः । केचित्तु पुष्पमालाया-मितिकारं पदसन्धिस्थानेऽपि वदन्ति । यथा—"समोषधय" इति 'सम् ओषधयः'। "ब्राह्मणस्तं" इति 'ब्राह्मणः तम्'। "राजँस्तं" इति राजन् तम् । इत्यादिः ।

(क्रमः)	विरामः (व्युत्क्रमः)	विरामः (संक्रमः)		
१ ओषधयः सं	समोषधयः	ओषधयः सं ।	इति ।	(विराम)
२ सं वदन्ते	वदन्ते सं	सं वदन्ते	,,	,,
३ वदन्ते सोमेन	सोमेन वदन्ते	वदन्ते सोमेन	,,	,,
४ सोमेन सह	सह सोमेन	सोमेन सह	,,	,,
५ सह राज्ञा	राज्ञा सह	सह राज्ञा	,,	,,
६ राज्ञेति राज्ञा				
७ यस्मै कृणोति	कृणोति यस्मै	यस्मै कृणोति	,,	,,
८ कृणोति ब्राह्मणः	ब्राह्मणः कृणोति	कृणोति ब्राह्मणः	,,	,,
९ ब्राह्मणस्तं	तं ब्राह्मणः	ब्राह्मणस्तं	,,	,,
१० तं राजन्	राजँस्तं	तं राजन्	,,	,,
११ राजन्पारयामसि	पारयामसि राजन्	राजन्पारयामसि		
१२ पारयामसीति पारयामसि ।				

*

[३] शिखा।

शिखा—लक्षणम्।

पदोत्तरां जटामेव शिखामार्याः प्रचक्षते।

ओषधयः सं, समोषधय, ओषधयः सं, — वदन्ते।
१ २ २ १ १ २ ३

सं वदन्ते, वदन्ते सं, सं वदन्ते, — सोमेन।
२ ३ ३ २ २ ३ ४

वदन्ते सोमेन, सोमेन वदन्ते, वदन्ते सोमेन, — सह।
३ ४ ४ ३ ३ ४ ५

सोमेन सह, सह सोमेन, सोमेन सह, — राज्ञा।
४ ५ ५ ४ ४ ५ ६

सह राज्ञा, राज्ञा सह, सह राज्ञा।
५ ६ ६ ५ ५ ६

राज्ञेति राज्ञा ॥
६ ६

यस्मै कृणोति, कृणोति यस्मै, यस्मै कृणोति, — ब्राह्मणः।
७ ८ ८ ७ ७ ८ ९

कृणोति ब्राह्मणो, ब्राह्मणः कृणोति, कृणोति ब्राह्मणस् — तम्।
८ ९ ९ ८ ८ ९ १०

ब्राह्मणस्तं, तं ब्राह्मणो, ब्राह्मणस्तं, — राजन्।
९ १० १० ९ ९ १० ११

तं राजन्, राजंस्तं, तं राजन्, — पारयामसि।
१० ११ ११ १० १० ११ १२

राजन्पारयामसि, पारयामसि राजन्, राजन् पारयामसि।
११ १२ १२ ११ ११ १२

पारयामसीति पारयामसि।
१२ १२

[४] रेखा ।

रेखा-लक्षणम् ।

क्रमाद् द्वित्रिचतुष्पञ्चपदक्रममुदाहरेत् । पृथक्पृथग्विपर्यस्य लेखामाहुः पुनः क्रमात् ॥

पूर्वार्धस्य—

२ (पदद्वयं) = ओषधयः सं । समोषधयः । ओषधयः सं ॥
३ (पदत्रयं) = सं वदन्ते सोमेन । सोमेन वदन्ते सं । सं वदन्ते ॥
४ (पदचतुष्कं) = वदन्ते सोमेन सह राज्ञा । राज्ञा सह सोमेन वदन्ते । वदन्ते सोमेन ॥
सोमेन सह । सह राज्ञा । राज्ञेति राज्ञा ॥

उत्तरार्धस्य—

२ = यस्मै कृणोति । कृणोति यस्मै । यस्मै कृणोति ॥
३ = कृणोति ब्राह्मणस्तं । तं ब्राह्मणः कृणोति । कृणोति ब्राह्मणः ॥
४ = ब्राह्मणस्तं राजन् पारयामसि । पारयामसि राजंस्तं ब्राह्मणः । ब्राह्मणस्तं ॥
तं राजन् । राजन् पारयामसि । पारयामसीति पारयामसि ॥

[यद्वा सर्वस्य मन्त्रस्य]

२ (पदद्वयं) = ओषधयः सं । समोषधयः । ओषधयः सम् ॥
३ (पदत्रयं) = सं वदन्ते सोमेन । सोमेन वदन्ते सं । सं वदन्ते ॥
४ (पदचतुष्कं) = वदन्ते सोमेन सह राज्ञा । राज्ञा सह सोमेन वदन्ते । वदन्ते सोमेन ॥
५ (पदपञ्चकं) = सोमेन सह राज्ञा यस्मै कृणोति । कृणोति यस्मै राज्ञा सह सोमेन । सोमेन सह ।
६ (पदषट्कं) = सह राज्ञा यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं । तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै राज्ञा सह ।
सह राज्ञा ॥

७ (पदसप्तकं) = राज्ञा यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन् पारयामसि ।
पारयामसि राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै राज्ञा । राज्ञा यस्मै ॥
यस्मै कृणोति । कृणोति ब्राह्मणः । ब्राह्मणस्तं । तं राजन् । राजन् पारयामसि ।
पारयामसीति पारयामसि ॥

[५] ध्वजः ।

ध्वज-लक्षणम् ।

ब्रूयादादेः क्रमं सम्यगन्तादुत्तारयेद्यदि । वर्गे च ऋचि वा यत्र पठनं स ध्वजः स्मृतः ॥*

जटादेः क्रमरूपं तु ह्यन्तादुत्तारयादिव ।
अर्धर्चा वा ऋचा वापि पठनं स ध्वजः स्मृतः ॥

(आदेः क्रमः)	(अन्तादुत्तारणं)
१ ओषधयः सं ।	२ पारयामसीति पारयामसि ।
३ सं वदन्ते ।	४ राजन् पारयामसि ।
५ वदन्ते सोमेन ।	६ तं राजन् ।
७ सोमेन सह ।	८ ब्राह्मणस्तं ।
९ सह राज्ञा ।	१० कृणोति ब्राह्मणः ।
११ राज्ञेति राज्ञा ।	१२ यस्मै कृणोति ।
१३ यस्मै कृणोति ।	१४ राज्ञेति राज्ञा
१५ कृणोति ब्राह्मणः ।	१६ सह राज्ञा ।
१७ ब्राह्मणस्तं ।	१८ सोमेन सह ।
१९ तं राजन् ।	२० वदन्ते सोमेन ।
२१ राजन् पारयामसि ।	२२ सं वदन्ते ।
२३ पारयामसीति पारयामसि ।	२४ ओषधयः सं ।

अत्र विशेषः ।

१ अत्र ध्वजस्य पठनक्रमोऽङ्कैः प्रदर्शितः ।

२ यथा मन्त्रस्यैकस्यैवं ध्वजो भवति, तथैव पञ्च-षट्-सप्त-मन्त्रसंख्याकस्य वर्गस्याप्येवमेव ध्वजो भवति । तत्र वर्गादिस्थितस्य पदद्वयस्य वर्गान्तस्थेन पदेन द्विरुक्तेनेतिकारसहितेन च संबद्धो ज्ञातव्यः । यथा ‘ अग्निमीळे...आ गमादिति आ गमत् ’ इति प्रथमस्य वर्गस्य ऋग्वेदस्य ध्वजो बोद्धव्यः ।

* वर्गे वा ऋचि वा यः स्यात्पठितः स ध्वजः स्मृतः । इति वा पाठः ।

[६] दण्डः ।

दण्ड-लक्षणम् ।

क्रममुक्त्वा विपर्यस्य पुनश्च क्रममुत्तरम् । अर्धर्चादेवमुक्तोऽयं क्रमदण्डोऽभिधीयते ।
चत्वारिंशद्भेदा भवन्ति दण्डस्य ।

पूर्वार्धस्य–

२ = ओषधयः सं ॥ समोषधयः ।
३ = ओषधयः सं । सं वदन्ते ॥ वदन्ते समोषधयः ।
४ = ओषधयः सं । सं वदन्ते । वदन्ते सोमेन ॥ सोमेन वदन्ते समोषधयः ।
५ = ओषधयः सं । सं वदन्ते । वदन्ते सोमेन । सोमेन सह ॥ सह सोमेन वदन्ते समोषधयः ।
६ = ओषधयः सं । सं वदन्ते । वदन्ते सोमेन । सोमेन सह । सह राज्ञा ॥
राज्ञा सह सोमेन वदन्ते समोषधयः ।
ओषधयः सं । सं वदन्ते । वदन्ते सोमेन । सोमेन सह । सह राज्ञा ॥ राज्ञेति राज्ञा ।

उत्तरार्धस्य–

२ = यस्मै कृणोति ॥ कृणोति यस्मै ।
३ = यस्मै कृणोति । कृणोति ब्राह्मणः ॥ ब्राह्मणः कृणोति यस्मै ।
४ = यस्मै कृणोति । कृणोति ब्राह्मणः । ब्राह्मणस्तं ॥ तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै ।
५ = यस्मै कृणोति । कृणोति ब्राह्मणः । ब्राह्मणस्तं । तं राजन् ॥ राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै ।
६ = यस्मै कृणोति । कृणोति ब्राह्मणः । ब्राह्मणस्तं । तं राजन् । राजन् पारयामसि ॥
पारयामसि राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मै ।
यस्मै कृणोति । कृणोति ब्राह्मणः । ब्राह्मणस्तं । तं राजन् । राजन् पारयामसि ॥
पारयामसीति पारयामसि ।

[७] रथः ।

रथ–लक्षणम् ।

अनुलोमं जटान्तं तु विलोमे तु पृथक् पृथक् । रथाख्यां विकृतिं ब्रूयाद्रथभेदः प्रकथ्यते ॥
अनुलोमं जटान्तं तु प्रपठेद्वै पृथक् पृथक् । जटाख्यां विकृतिं धीमान् विलोमे तु पृथक् पृथक् ॥
अथैकादशभेदा भवति । विलोमेनैकादशभेदा ॥

पादशोऽर्धर्चशो वापि सहोक्त्या दण्डवद्रथः ।

रथस्त्रिविधः । द्विचक्रस्त्रिचक्रश्चतुश्चक्रश्चेति । तत्र द्विचक्रो रथोऽर्धर्चशो भवति । त्रिचक्रस्तु रथः प्रतिपादे समानपद–संख्यायुतस्य गायत्रीछन्दस्कस्यैव मन्त्रस्य भवति । चतुश्चक्रो रथस्तु पादश एव भवति ।

[१] द्विचक्रीरथः (अर्धर्चशः)

(पूर्वार्ध) (उत्तरार्ध)

[१] (१) ओषधयः सं । यस्मै कृणोति । (प्रथम एकपात्क्रमः)
समोषधयः । कृणोति यस्मैं । (व्युत्क्रमः)

[२] (१) ओषधयः सं । यस्मै कृणोति । (द्वितीयो द्विपात्क्रमः)
(२) सं वदन्ते । कृणोति ब्राह्मणः । ,,
वदन्ते समोषधयः । ब्राह्मणः कृणोति यस्मैं । (व्युत्क्रमः)

[३] (१) ओषधयः सं । यस्मैं कृणोति । (तृतीयस्त्रिपात्क्रमः)
(२) सं वदन्ते । कृणोति ब्राह्मणः । ,,
(३) वदन्ते सोमेन । ब्राह्मणस्तं । ,,
सोमेन वदन्ते समोषधयः । तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मैं । (व्युत्क्रमः)

[४] (१) ओषधयः सं । यस्मैं कृणोति । (चतुर्थश्चतुष्पात्क्रमः)
(२) सं वदन्ते । कृणोति ब्राह्मणः । ,,
(३) वदन्ते सोमेन । ब्राह्मणस्तं । ,,
(४) सोमेन सह । तं राजन् । ,,
सह सोमेन वदन्ते समोषधयः । राजंस्तं ब्राह्मणः कृणोति यस्मैं । (व्युत्क्रमः)

[५] (१) ओषधयः सं । यस्मैं कृणोति । (पञ्चमः पञ्चपात्क्रमः)
(२) सं वदन्ते । कृणोति ब्राह्मणः । ,,
(३) वदन्ते सोमेन । ब्राह्मणस्तं । ,,
(४) सोमेन सह । तं राजन् । ,,
(५) सह राज्ञा । राजन् पारयामसि । ,,
राज्ञेति राज्ञा । पारयामसीति पारयामसि । (समाप्तिः)

(२) द्विचक्री रथः ।

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ ऋ० १।१।१
अयं देवाय जन्मने स्तोमो विप्रेभिरासया । अकारि रत्नधातमः ॥ ऋ० १।२०।१

अनयोर्द्वयोर्मन्त्रयोः साकल्येनापि द्विचक्रो रथो भवति । तत्र प्रथमः प्रकारो यथा—

(ऋ० १।१।१) (ऋ० १।२०।१)

[१] अग्निमीळे । अयं देवाय ॥
ईळेऽग्निं । देवायायं ॥

[२] अग्निमीळे । ईळे पुरोहितं ॥ अयं देवाय । देवाय जन्मने ॥
पुरोहितमीळेऽग्निं । जन्मने देवायायं ॥

[३] अग्निमीळे । ईळे पुरोहितं । पुरोहितं यज्ञस्य ॥ अयं देवाय । देवाय जन्मने । जन्मने स्तोमः । यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं । स्तोमो जन्मने देवायायं ॥

[४] अग्निमीळे । ईळे पुरोहितं । पुरोहितं यज्ञस्य । ' पुरोहितमिति पुरःऽहितं ' । यज्ञस्य देवं ॥ अयं देवाय । देवाय जन्मने । जन्मने स्तोमः । स्तोमो विप्रेभिः ॥
देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं ॥ विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं ॥

[५] अग्निमीळे । ईळे पुरोहितं । पुरोहितं यज्ञस्य । ' पुरोहितमिति पुरःऽहितं ' । यज्ञस्य देवं । देवमृत्विजं ॥
अयं देवाय । देवाय जन्मने । जन्मने स्तोमः । स्तोमो विप्रेभिः । विप्रेभिरासया ॥
ऋत्विजं देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं ॥ आसया विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं ॥

[६] अग्निमीळे । ईळे पुरोहितं । पुरोहितं यज्ञस्य । ' पुरोहितमिति पुरःऽहितं ' । यज्ञस्य देवं । देवमृत्विजं ॥
अयं देवाय । देवाय जन्मने । जन्मने स्तोमः । स्तोमो विप्रेभिः । विप्रेभिरासया ।
ऋत्विजमित्यृत्विजं । आसयेत्यासया ॥

[७] होतारं रत्नधातमं । अकारि रत्नधातमः ॥
रत्नधातमं होतारं । रत्नधातमोऽकारि ॥
होतारं रत्नधातमं । अकारि रत्नधातमः ॥
रत्नधातममिति रत्नऽधातमं । रत्नधातम इति रत्नऽधातमः ॥

(३) द्विचक्री रथः ।

पूर्वोक्तयोर्द्वयोर्मन्त्रयोः साकल्येन द्विचक्री रथो भवति । तस्य द्वितीयः प्रकारो यथा—

(ऋ० १।१।१) (ऋ० १।२०।१)

[१] (१) अग्निमीळे । अयं देवाय ॥
ईळेऽग्निं । देवायायं ॥

[२] (१) अग्निमीळे । अयं देवाय ॥
(२) ईळे पुरोहितं । देवाय जन्मने ॥
पुरोहितमीळेऽग्निं । जन्मने देवायायं ॥

[३] (१) अग्निमीळे । अयं देवाय ॥
(२) ईळे पुरोहितं । देवाय जन्मने ॥
(३) पुरोहितं यज्ञस्य । जन्मने स्तोमः ॥
यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं ॥
स्तोमो जन्मने देवायायं ॥

[४] (१) अग्निमीळे । अयं देवाय ॥
(२) ईळे पुरोहितं । देवाय जन्मने ॥
(३) पुरोहितं यज्ञस्य । जन्मने स्तोमः ॥
'पुरोहितमिति पुरःऽहितं' ।
(४) यज्ञस्य देवं । स्तोमो विप्रेभिः ॥
देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं ॥
विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं ॥

(ऋ० १।१।१) (ऋ० १।२०।१)

[५] (१) अग्निमीळे । अयं देवाय ॥
(२) ईळे पुरोहितं । देवाय जन्मने ॥
(३) पुरोहितं यज्ञस्य । जन्मने स्तोमः ॥
'पुरोहितमिति पुरःऽहितं' ।
(४) यज्ञस्य देवं । स्तोमो विप्रेभिः ॥
(५) देवमृत्विजं । विप्रेभिरासया ॥
ऋत्विजं देवं यज्ञस्य पुरोहितमीळेऽग्निं ।
आसया विप्रेभिः स्तोमो जन्मने देवायायं ।

[६] (१) अग्निमीळे । अयं देवाय ॥
(२) ईळे पुरोहितं । देवाय जन्मने ॥
(३) पुरोहितं यज्ञस्य । जन्मने स्तोमः ॥
'पुरोहितमिति पुरःऽहितं' ।
(४) यज्ञस्य देवं । स्तोमो विप्रेभिः ॥
(५) देवमृत्विजं । विप्रेभिरासया ॥
(६) ऋत्विजमित्यृत्विजं । आसयेत्यासया ॥

[७] (१) होतारं रत्नधातमं । अकारि रत्नधातमः ॥
रत्नधातमं होतारं । रत्नधातमोऽकारि ॥
होतारं रत्नधातमं । अकारि रत्नधातमः ॥
रत्नधातममिति रत्नऽधातमं ।
रत्नधातम इति रत्नऽधातमः ॥

[४] त्रिचक्री रथः ।

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ (ऋ० १।२२।१९)

इत्यस्य त्रिपदागायत्रीछन्दस्कस्य मन्त्रस्य प्रतिपादं समानपदसंख्यात्वात्त्रिचक्री रथो भवति, यथा—

(प्रथमः पादः) (द्वितीयः पादः) (तृतीयः पादः)

[१] (१) विष्णोः कर्माणि । यतो व्रतानि । इंद्रस्य युज्यः । (प्रथमः क्रमः)

कर्माणि विष्णोः । व्रतानि यतः । युज्य इंद्रस्य । (व्युत्क्रमः)

[२] (१) विष्णोः कर्माणि । यतो व्रतानि । इंद्रस्य युज्यः । (द्वितीयः क्रमः)

(२) कर्माणि पश्यत । व्रतानि पस्पशे । युज्यः सखा । ,,

पश्यत कर्माणि विष्णोः । पस्पशे व्रतानि यतः । सखा युज्य इंद्रस्य । (व्युत्क्रमः)

(प्रथमः पादः) विष्णोः कर्माणि । कर्माणि पश्यत । पश्यतेति पश्यत । (समाप्तिः)

(द्वितीयः ,,) यतो व्रतानि । व्रतानि पस्पशे । पस्पश इति पस्पशे । ,,

(तृतीयः ,,) इंद्रस्य युज्यः । युज्यः सखा । सखेति सखा । ,,

[५] चतुश्चक्री रथः ।

चतुश्चक्री रथश्चतुष्पान्मन्त्रस्य पादशो भवति, यथा—

(प्रथमः पादः) (द्वितीयः पादः) (तृतीयः पादः) (चतुर्थः पादः)

[१] (१) ओषधयः सं । सोमेन सह । यस्मै कृणोति । तं राजन् । (प्रथमः क्रमः)

समोषधयः । सह सोमेन । कृणोति यस्मै । राजंस्तं । (व्युत्क्रमः)

[२] (१) ओषधयः सं । सोमेन सह । यस्मै कृणोति । तं राजन् । (द्वितीयः क्रमः)

(२) सं वदंते । सह राज्ञा । कृणोति ब्राह्मणः । राजन्पारयामसि । ,,

वदंते समोषधयः । राज्ञा सह सोमेन । ब्राह्मणः कृणोति यस्मै । पारयामसि राजंस्तं । (व्युत्क्रमः)

(प्रथमः पादः) ओषधयः सं । सं वदंते । वदंत इति वदन्ते । (समाप्तिः)

(द्वितीयः ") सोमेन सह । सह राज्ञा । राज्ञेति राज्ञा । ,,

(तृतीयः ") यस्मै कृणोति । कृणोति ब्राह्मणः । ब्राह्मण इति ब्राह्मणः । ,,

(चतुर्थः ") तं राजन् । राजन्पारयामसि । पारयामसीति पारयामसि । ,,

[८] घनः ।

घनश्चतुर्विधः । घनो घनवल्लभश्च । तौ च प्रत्येकं द्विधा भवतः ।

[१] प्रथमं घन-लक्षणम् ।

अन्तात्क्रमं पठेत्पूर्वमादिपर्यन्तमानयेत् । आदिक्रमं नयेदन्तं घनमाहुर्मनीषिणः ॥

(१) पूर्वार्धस्य (अन्तादादिपर्यन्तम्)

[१] राज्ञेति राज्ञा । सह राज्ञा । सोमेन सह । वदन्ते सोमेन । सं वदन्ते । ओषधयः सं–

(आदितोऽन्तपर्यन्तम्)

सं वदन्ते । वदन्ते सोमेन सोमेन सह । सह राज्ञा । राज्ञेति राज्ञा ।

(२) उत्तरार्धस्य (अन्तादिपर्यन्तम्)

[२] पारयामसीति पारयामसि । राजन् पारयामसि । तं राजन् । ब्राह्मणस्तं । कृणोति ब्राह्मणः। यस्मै कृणोति–

(आदितोऽन्तपर्यन्तम्)

कृणोति ब्राह्मणः । ब्राह्मणस्तं । तं राजन् । राजन् पारयामसि । पारयामसीति पारयामसि ।

[२] द्वितीयं घनलक्षणम् ।

शिखामुक्त्वा विपर्यस्य तत्पदानि पुनः पठेत् । अयं घन इति प्रोक्त इत्यष्टौ विकृतीः पठेत् ॥

[१]

शिखापाठः			तस्य विपर्यासः	तत्पदानां पुनः पाठः
ओषधयः सं	समोषधय	ओषधयः सं वदन्ते	वदन्ते समोषधय	ओषधयः सं वदन्ते ॥
सं वदन्ते	वदन्ते सं	सं वदन्ते सोमेन	सोमेन वदन्ते सं	सं वदन्ते सोमेन ॥
वदन्ते सोमेन	सोमेन वदन्ते	वदन्ते सोमेन सह	सह सोमेन वदन्ते	वदन्ते सोमेन सह ॥
सोमेन सह	सह सोमेन	सोमेन सह राज्ञा	राज्ञा सह सोमेन	सोमेन सह राज्ञा ॥
सह राज्ञा	राज्ञा सह	सह राज्ञा ॥	राज्ञेति राज्ञा ॥	

[२]

यस्मै कृणोति कृणोति यस्मै यस्मै कृणोति ब्राह्मणो ब्राह्मणः कृणोति यस्मै यस्मै कृणोति ब्राह्मणः॥

कृणोति ब्राह्मणो ब्राह्मणः कृणोति कृणोति ब्राह्मणस्तं तं ब्राह्मणः कृणोति कृणोति ब्राह्मणस्तं ॥

ब्राह्मणस्तं तं ब्राह्मणो ब्राह्मणस्तं राजन् राजंस्तं ब्राह्मणो ब्राह्मणस्तं राजन् ॥

तं राजन् राजंस्तं तं राजन् पारयामसि पारयामसि राजंस्तं तं राजन् पारयामसि ॥

राजन् पारयामसि पारयामसि राजन् । राजन् पारयामसि ॥ पारयामसीति पारयामसि ।

घनपाठः ।

(१ शिखापाठः, २ तस्यविपर्ययः, ३ तत्पदानां च पुनः पाठो घनः)

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे । (ऋ० १।१०।१)

(१) प्रथमोऽर्धः ।

[१] गायंति त्वा, त्वा गायंति, गायंति त्वा, गायत्रिणो, गायत्रिणस्त्वा गायंति, गायंति त्वा गायत्रिणः ॥

[२] त्वा, गायत्रिणो, गायत्रिणस्त्वा, त्वा गायत्रिणो,ऽर्चंत्य;—ऽर्चंति गायत्रिणस्त्वा, त्वा गायत्रिणोऽर्चंति ॥

[३] गायत्रिणोऽर्चंत्य,—ऽर्चंति गायत्रिणो, गायत्रिणोऽर्चंत्यर्कम—ऽर्कमर्चंति गायत्रिणो, गायत्रिणोऽर्चंत्यर्कम् ॥

[४] अर्चंत्यर्कम—ऽर्कमर्चंत्य—ऽर्चंत्यर्कमऽर्किणो;ऽर्किणोऽर्कमर्चंत्य—ऽर्चंत्यर्कमर्किणः ॥

[५] अर्कमर्किणो,—ऽर्किणोऽर्कम—ऽर्कमर्किणः ॥ अर्किण इत्यर्किणः ॥

(२) द्वितीयोऽर्धः ।

[१] ब्रह्माणस्त्वा, त्वा ब्रह्माणो, ब्रह्माणस्त्वा, शतक्रतो; शतक्रतो त्वा ब्रह्माणो, ब्रह्माणस्त्वा शतक्रतो ॥

[२] त्वा शतक्रतो, शतक्रतो त्वा, त्वा शतक्रत, उदु—च्छतक्रतो त्वा, त्वा शतक्रत उत् ॥

[३] शतक्रत उदुच्छतक्रतो, शतक्रत उद्वंशमिव; वंशमिवोच्छतक्रतो, शतक्रत उद्वंशमिव ॥
शतक्रतो इति शतऽक्रतो ॥

[४] उद्वंशमिव, वंशमिवोदुद्वंशमिव, येमिरे; येमिरे वंशमिवोदु—द्वंशमिव येमिरे ॥

[५] वंशमिव येमिरे, येमिरे वंशमिव, वंशमिव येमिरे ॥
वंशमिवेति वंशम्ऽइव । येमिर इति येमिरे ॥

पञ्चसन्धियुक्तो घनपाठः ।

(घनवल्लभः)

पदद्वयस्य क्रमोत्क्रमव्युत्क्रामाभिक्रमसंक्रमैः पञ्चसन्धिपाठो भवति। अनुलोमविलोमानुलोमैर्जटापाठो जायते। जटया सहोत्तरपदपाठेन शिखापाठो भवति। क्रममुक्त्वा, विपर्यस्य, पुनश्च क्रमपाठे कृते ध्वजो भवति । जटादण्डाभ्यां घनपाठः सिद्ध्यति । सर्वमेवैतत्पञ्चसंधियुते घनपाठे घनवल्लभे समुच्चयेन संगच्छते ।

परा मे यन्ति धीतयो गावो न गव्यूतीरनु ।
इच्छन्तीरुरुचक्षसम् ॥ (ऋ० १।२५।१६)

[१] परा मे । मे मे । मे परा । परा परा । परा मे ॥
परा मे, मे परा, परा मे, यंति; यंति मे परा, परा मे यंति ॥

[२] मे यंति । यंति यंति । यंति मे । मे मे । मे यंति ॥
मे यंति, यंति मे, मे यंति, धीतयो; धीतयो यंति मे, मे यंति धीतयः ॥

[३] यंति धीतयः । धीतयो धीतयः । धीतयो यंति । यंति यंति । यंति धीतयः ॥
यंति धीतयो, धीतयो यंति, यंति धीतयो, गावो, गावो धीतयो यंति, यंति धीतयो गावः ॥

[४] धीतयो गावः । गावो गावः । गावो धीतयः । धीतयो धीतयः । धीतयो गावः ।
धीतयो गावो, गावो धीतयो, धीतयो गावो; न; न गावो धीतयो, धीतयो गावो न ॥

[५] गावो न । न न । न गावः । गावो गावः । गावो न ॥
गावो न, न गावो, गावो न, गव्यूती;—र्गव्यूतीर्न गावो, गावो न गव्यूतीः ॥

[६] न गव्यूतीः । गव्यूतीर्गव्यूतीः । गव्यूतीर्न । न न । न गव्यूतीः ।
न गव्यूती,र्गव्यूतीर्न, न गव्यूतीर—ऽन्व,—ऽनु गव्यूतीर्न, न गव्यूतीरनु ॥

[७] गव्यूतीरनु । अन्वनु । अनु गव्यूतीः । गव्यूतीर्गव्यूतीः । गव्यूतीरनु ॥
गव्यूतीरन्व—ऽनुगव्यूती—र्गव्यूतीरनु ॥ अन्वित्यनु ॥

[८] इच्छंतीरुरुचक्षसं । उरुचक्षसमुरुचक्षसं । उरुचक्षसमिच्छंतीः । इच्छंतीरिच्छंतीः ।
इच्छंतीरुरुचक्षसं ॥

उरुचक्षसमित्युरुऽचक्षसं ॥

पञ्चसन्धियुक्तो जटापाठः ।

←————पञ्चसंधिपाठः————→ ←——जटापाठः——→

[१] परा मे । मे मे । मे परा । परा परा । परा मे ॥ परा मे, मे परा, परा मे ॥

[२] मे यंति । यंति यंति । यंति मे । मे मे । मे यंति ॥ मे यंति, यंति मे, मे यंति ॥

[३] यंति धीतयः । धीतयो धीतयः । धीतयो यंति । यंति यंति । यंति धीतयः ॥
यंति धीतयो, धीतयो यंति, यंति धीतयः ।

[४] धीतयो गावः । गावो गावः । गावो धीतयः । धीतयो धीतयः । धीतयो गावः ॥
धीतयो गावो, गावो धीतयो, धीतयो गावः ॥

[५] गावो न । न न । न गावः । गावो गावः । गावो न ॥ गावो न, न गावो, गावो न ॥

[६] न गव्यूतीः । गव्यूतीर्गव्यूतीः । गव्यूतीर्न । न न । न गव्यूतीः ॥ न गव्यूतीर्गव्यूतीर्न न गव्यूतीः ॥

[७] गव्यूतीरनु । अन्वनु । अनु गव्यूतीः । गव्यूतीर्गव्यूतीः । गव्यूतीरनु ॥
गव्यूतीरन्वनु गव्यूतीर्गव्यूतीरनु ॥ अन्वित्यनु । अन्वित्यनु ॥

[८] इच्छंतीरुरुचक्षसं । उरुचक्षसमुरुचक्षसं । उरुचक्षसमिच्छंतीः । इच्छंतीरिच्छंतीः ।
इच्छंतीरुरुचक्षसं ॥
इच्छंतीरुरुचक्षसमुरुचक्षसमिच्छंतीरिच्छंतीरुरुचक्षसं ।
उरुचक्षसमित्युरुऽचक्षसं । उरुचक्षसमित्युरुऽचक्षसं ॥

[एवमेव पञ्चसन्धियुक्ताः सर्वा अपि विकृतयः पठ्यन्ते वेदविद्भिः ।
पदक्रम विशेषज्ञो वर्णक्रमविचक्षणः ।
स्वरमात्राविशेषज्ञो गच्छेदाचार्यसंपदम् ॥
संहितापाठतः पुण्यं द्विगुणं पदपाठतः ।
त्रिगुणं क्रमपाठेन जटापाठेन षड्गुणम् ॥ (वराहपुराणे)

प्रश्नाः

१ पञ्चसन्धिका लक्षण लिखिये और करके बताइये ।

२ विकृति कितनी हैं ? और उनके लक्षण क्या है।

३ प्रत्येक विकृति करके बताइये ।

४ ऋषियोंने वेदकी सुरक्षाके लिये इतने यत्न किये थे, पर आप वेदको सुरक्षित रखनेके लिये क्या कर रहे हैं ?

५ क्या आपके घरमें वेदके ग्रंथ हैं ?

६ क्या आप प्रतिदिन वेदोंका पठन पाठन करते हैं ?

७ क्या आपने वेदोंका प्रचार करनेके कार्यमें तन मन धनकी सहायता की है ?

८ क्या आपने अच्छे वेदोंके ग्रंथ लेकर वेदपाठियोंको दिये हैं ?

९ क्या आपने वेदोंका अच्छा मुद्रण होनेके लिये तन मन धनसे सहायता की है ?

१० क्या आप जानते हैं कि 'वेदोंका पढना पढाना, सुनना सुनाना, समझना समझाना, और वेदज्ञानका प्रचार करना और कराना आपका आवश्यक कर्तव्य है ?'

११ क्या आप जानते हैं कि वेद ज्ञानके प्रचारसे विश्वमें शान्ति स्थापन हो सकती है, इसलिये यह प्रचार करना और करवाना आपका कर्तव्य है ?